हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह0)

बादशाहों की नहीं, अल्लाह की है यह ज़मीन

قُلِ اللَّهُمَّ مَالِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَن تَشَاءُ وَتَنزِعُ الْمُلْكَ مِمَّن تَشَاءُ
وَتُعِزُّ مَن تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَن تَشَاءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

"आप कहिये ऐ अल्लाह! ऐ बादशाहत के मालिक! जिसको चाहे तू बादशाहत दे और जिससे चाहे बादशाहत छीन ले, जिसको चाहे इज़्ज़त दे और जिसको चाहे ज़लील करे, भलाई तेरे ही हाथ में है और बेशक तू हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखने वाला है।"

"ऐ अल्लाह! ऐ सल्तनत के मालिक! तेरे इख़्तियार में है तू जिसको चाहे सल्तनत से नवाज़े और जिससे चाहे आन की आन में पलक झपकाने में सल्तनत छीन ले।

इतिहास बताता है कि हज़ारों बरस की शहंशाहियत जिनका डंका बज रहा था, जिनकी तूती बोल रही थी, जिनके वालियान-ए-सल्तनत (उत्तराधिकारी) की एक निगाह पड़ जाना समझा जाता था कि "हुमा" उसके सर पर बैठ गई है और वह जिसके सर पर से होकर उड़ गई उसकी तक़दीर बदल जाती थी, मिट्टी पर हाथ रख दें तो सोना हो जाए, पलक झपकाते में अल्लाह ने उनकी सल्तनतों का सूरज डुबो दिया और ऐसा डुबोया कि उसके बाद कभी निकला ही नहीं।

ग्रेट रोमन इम्पाएर का इतिहास बताता है कि गिबॉन की किताब "डेक्लाइन एंड फ़ाल ऑफ़ रोमन इम्पाएर" आप पढ़ लीजिए कि वह क्या सल्तनत थी? क्या शंहशाहियत थी? किस तरह उसका ज़वाल (पतन) हुआ? सासानी (परशियन) सल्तनत का इतिहास पढ़ लीजिए कि कैसा उसका डंका बजता था, उसका दुरफ़श-ए-कावियानी (ध्वज) और उसकी आतिश-ए-मुक़द्दस (पवित्र अग्नि), हिन्दुस्तान की सरहदों तक उसकी सल्तनत पहुंची हुई थी, उसके बारे में कहा जाता है:

हमने उसको अफ़साना-ए-पारीना (पुरानी कहानी) बना दिया
और उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिए।"

मारूज़ अज़ (उदधृत):
(पत्रिका – एक चौंका देने वाली आयत: १०)

अनुवाद:
मोहम्मद सैफ़